

## भारत-चीन-श्रीलंका ट्रायंगल

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में चीन के वदेश मंत्री (CFM) ने श्रीलंका का दौरा किया है।

- इस बैठक के दौरान चीन के वदेश मंत्री ने हृदि महासागर द्वीपीय राष्ट्रों के लिये एक मंच का प्रस्ताव रखा और यह भी कहा कि किसी भी 'तृतीय पक्ष' को चीन-श्रीलंका संबंधों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।
- यद्यपि 'तृतीय-पक्ष' के नाम का खुलासा नहीं किया गया, कति कई जानकार मानते हैं कि यह भारत के लिये कहा गया था।



### प्रमुख बंदी

- **श्रीलंका यात्रा की मुख्य विशेषताएँ**
  - चीन के वदेश मंत्री की यात्रा में ऐतिहासिक 'रबर-राइस पैक्ट' (1952) की 70वीं वर्षगाँठ और चीन एवं श्रीलंका के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 65वीं वर्षगाँठ के अवसर पर समारोह शुरू करने की परिकल्पना की गई थी।
    - रबर-राइस पैक्ट के तहत चीन ने रबर और अन्य आपूर्तियों के आयात हेतु प्रतिबद्धता ज़ाहिर की थी, क्योंकि श्रीलंका, जो कि रबर का एक प्रमुख निर्यातक है, चावल की कीमत में वृद्धि और रबर की कीमत में गिरावट का सामना कर रहा था।
  - चीन के वदेश मंत्री द्वारा कोलंबो में कोलंबो पोर्ट सर्टि और हंबनटोटा पोर्ट (श्रीलंका में) का जिक्र करते हुए इस बात पर जोर दिया गया कि दोनों पक्षों को इनका सही से उपयोग करना चाहिये।
  - उन्होंने श्रीलंका से **क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी** (Regional Comprehensive Economic Partnership- RCEP) की संभावनाओं पर विचार करने और मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत फरि से शुरू करने का आग्रह किया।
  - सर्वसम्मति और तालमेल बनाने तथा विकास को बढ़ावा देने के लिये "हृदि महासागर द्वीप देशों के विकास पर एक मंच" भी प्रस्तावित किया गया था।
- **चीन-श्रीलंका संबंधों के बारे में:**
  - **श्रीलंका का सबसे बड़ा ऋणदाता:** चीन श्रीलंका का सबसे बड़ा द्विपक्षीय ऋणदाता है।
    - श्रीलंका के सार्वजनिक क्षेत्र को चीन द्वारा प्रदत्त ऋण केंद्र सरकार के वदेशी ऋण का लगभग 15% है।
    - श्रीलंका अपने वदेशी ऋण के बोझ को दूर करने के लिये चीनी ऋण पर बहुत अधिक निर्भर है।
  - **अवसंरचना परियोजनाओं में नविश:** चीन ने वर्ष 2006-19 के बीच श्रीलंका की बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में लगभग 12 अरब अमेरिकी डॉलर का नविश किया है।
  - **छोटे राष्ट्रों के हितों में बदलाव:** श्रीलंका का आर्थिक संकट इसे अपनी नीतियों को बीजगि के हितों के साथ संरेखित करने के लिये आगे और बाध्य कर सकता है।
  - **हृदि महासागर में चीन का प्रभाव:** चीन का दक्षिण एशिया और हृदि महासागर में दक्षिण पूर्व एशिया तथा प्रशांत क्षेत्र की तुलना में

अधिक प्रभाव है।

- चीन को ताइवान के वरिध में, **दक्षिण चीन सागर** और पूरवी एशिया में क्षेत्रीय ववादों व अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया के साथ असंख्य संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है।

#### ■ भारत की चिंताएँ:

- **सागर पहल का वरिध:** प्रस्तावति हदि महासागर द्वीपीय देशों के मंच ने भारत के प्रधानमंत्री की '**सागर**' (**Security and Growth for All in the Region- SAGAR**) पहल के वरिध में आवाज उठाई।
  - हदि महासागर क्षेत्र (**IOR**) में एक सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की रणनीतिक भूमिका है।
- **वकिस से संबंधति मुद्दे: 99 वर्ष के पटटे के हसिसे के रूप में चीन का श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पर औपचारिक नथितरण है।**
  - श्रीलंका ने कोलंबो बंदरगाह शहर के चारों ओर एक विशेष आर्थिक क्षेत्र और चीन द्वारा वतितपोषति एक नया आर्थिक आयोग स्थापति करने का नरिणय लयिा है।
  - भारत के ट्रांस-शपिमेंट कार्गो का 60% कार्य कोलंबो बंदरगाह से होता है।
  - हंबनटोटा और कोलंबो पोर्ट सटि परयोजना को पटटे पर देने से चीनी नौसेना की लयि हदि महासागर में स्थायी उपस्थतिलगभग तय हो गई है जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लयि चिंताजनक है।
  - भारत को घेरने की **चीनी रणनीति को स्ट्रग्स ऑफ परल्स स्ट्रैटेजी** कहा गया है।
- **भारत के पड़ोसियों पर प्रभाव:** बांग्लादेश, नेपाल और मालदीव जैसे अन्य दक्षिण एशियाई देश भी बड़े पैमाने पर बुनयिादी ढाँचा परयोजनाओं के वतितपोषण के लयि चीन की ओर रुख कर रहे हैं।

## आगे की राह

- **सामरिक हतियों का संरक्षण:** श्रीलंका के साथ नेबरहुड फ्रस्ट की नीतिको पोषति करना भारत के लयि हदि महासागर क्षेत्र में अपने रणनीतिक हतियों को संरक्षति करने हेतु महत्त्वपूर्ण है।
- **क्षेत्रीय मंचों का लाभ उठाना:** बमिस्टेक, सारक, सागर और आईओआरए जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग प्रौद्योगिकी संचालति कृषि, समुद्री क्षेत्र के वकिस, आईटी एवं संचार बुनयिादी ढाँचे आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के लयि कयिा जा सकता है।
- **चीन के वसितार को रोकना:** भारत को ज़ाफना में कांकेसंतुराई बंदरगाह और त्रिकोमाली में तेल टैंक फार्म परयोजना पर काम करना जारी रखना होगा ताकि यह सुनिश्चति हो सके कि चीन श्रीलंका में आगे कोई पैठ नहीं बना सके।
  - दोनों देश आर्थिक लचीलापन पैदा करने के लयि नजी क्षेत्र के नविश को बढ़ाने में भी सहयोग कर सकते हैं।
- **भारत की सॉफ्ट पावर का लाभ उठाना:** प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत अपनी आईटी कंपनियों की उपस्थतिका वसितार करके श्रीलंका में रोज़गार के अवसर पैदा कर सकता है।
  - ये संगठन हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोज़गार पैदा कर सकते हैं तथा द्वीपीय राष्ट्र की सेवा अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं।

## स्रोत- द हदि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-china-sri-lanka-triangle>